फरीदाबाद
मजदूर समाचार
मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

★ Reflections on Marx's Critique of Political Economy
★ a ballad against work
★ Self Activity of Wage-Workers: Towards a Critique of Representation & Delegation
The books are free

नई सीरीज नम्बर 142 अप्रैल 2000

माहौल ऐसा ही है इसलिये (8)

– सस्ते से सस्ते में, कम से कम लागत पर, अधिक से अधिक मारजिन....

– बढती रफ्तार, बढता वर्क लोड, बढती असुरक्षा, बढते डर-भय....

– बढता आटोमेशन, बढती ठेकेदारी प्रथा, फैलता कैजुअल सिस्टम, वर्कशॉपों-छोटी फैक्ट्रियों में कार्य हस्तान्तरण का बढता चलन...

यह है वर्तमान।

और इसका अर्थ है : फैक्ट्रियों - दफ्तरों-कार्यालयों में सिमटते-सिकुड़ते आतंकित परमानेन्ट वरकर, ठोकर की नोक पर कैजुअल-ठेकेदारों के मजदूर, वर्कशॉपों की अत्याधिक घुटन में अथवा सड़कों की खाक छानने को धकेले जातों के झुण्ड।

माहौल ऐसा ही है। इसलिये....

निगाहें करनी पर

कथनी-दर-कथनी से हमें बीन्धे रखने के लिये रेडियो-टी वी-अखबार-पत्रिकायें-प्रवचन-भाषण-विज्ञापन निरन्तर जुटे हैं। कहने-मानने के अनुसार वास्तविकता ढल जाती तो ... " कथनी नहीं करनी देखो" बीत चुका मुहावरा होता।

अधिकाधिक काम का बोझ, असुरक्षा, आतंक, धोखाधड़ी के विष से लबालब हकीकत पर दृष्टि केन्द्रित करना वर्तमान और वर्तमान के ताँडव से निपटने की प्राथमिक आवश्यकता है। उदाहरण के तौर पर यहाँ ठेकेदारी प्रथा और कैजुअल-टेम्परेरी सिस्टम को लेंगे।

छुरी की धार हैं कम्पनियाँ

एक-दूसरे को खा कर अथवा एक-दूसरे में मिल कर विशाल से विशालतर होती जा रही कम्पनियाँ मजदूरों को अधिकाधिक निचोड़ने के जरिये हैं। कम्पनियों की आड़ में हैं बैंक और इन दोनों की पीठ पर हाथ हैं सरकारों के। कम से कम लागत पर अधिकाधिक निचोड़ने के लिये इनके बीच गिरोहबन्दी है – जो निचोड़ा जाता है उसमें टैक्स, ब्याज, मुनाफा आदि के रूप में इनकी हिस्सा-पत्ती है। इसलिये जानते हुये भी अनेक बातों से अनजान होने का यह ढोंग करते हैं।

ठेकेदारी प्रथा और कैजुअल सिस्टम का प्रसार अधिक सस्ते में काम करवाने के लिये जानबूझ कर किया जा रहा है।

दाँते हैं टुकड़खोर

बही-खातों में ठेकेदारों के मजदूरों, कैजुअल वरकरों को कानून अनुसार वेतन दे कर भी कम्पनी को परमानेन्ट वरकर रखने की बजाय ऐसे काम करवाने में भारी फायदा होता है। कम्पनियों के बही-खातों में कानूनी खानापूर्तियाँ की जाती हैं।

और : डायरेक्टर, मैनेजर, लीडर, अधिकारी, ठेकेदार, वेन्डर-सप्लायर सरकारी न्यूनतम वेतन तक कैजुअल व ठेकेदारों के वरकरों को नहीं दे कर अलग से अपनी जेबें भरते हैं। कम्पनी के अफसर, सरकारी अधिकारी और लीडर अपनी हिस्सा-पत्ती के एवज में इस सब के बारे में अनजान होने के दिखावे करते हैं।

राहें हैं साँझी पहल

ठेकेदारी प्रथा, कैजुअल सिस्टम, वर्कशॉपों-छोटी फैक्ट्रियों का फैलाव मजदूरी करने को अभिशप्त प्रत्येक की पीड़ा को और भी बढा रहा है। तथा, आज बढती सँख्या में स्त्री-पुरुष मजदूर बनने को मजबूर हैं।

बड़ी फैक्ट्रियों में परमानेन्ट मजदूर को जो मिलता है उससे एक चौथाई में-दसवें हिस्से तक में वही काम करवाना परमानेन्टों को बलि के बकरों में बदल रहा है.... कितने दिन खैर मनायेंगे? जो हैं उन्हें ही निकालने का सिलसिला जारी है ऐसे में अब आगे कितने परमानेन्ट होंगे ? और, कैसी होगी अब परमानेन्टी ?

सस्ते दर सस्ते का चक्रव्यूह हमारे जीवन को बद से बदतर कर रहा है। लागत कम करने के इनके प्रयासों की काट है लागत बढा देना। ठेकेदारी प्रथा और कैजुअल सिस्टम से निपटने के लिये ठेकेदारों के मजदूरों व कैजुअल वरकरों से काम करवाने को कम्पनियों के लिये बहुत मँहगा कर देना जरूरी है। इसके लिये परमानेन्ट मजदूरों, कैजुअल वरकरों, ठेकेदारों के मजदूरों और वर्कशॉप वरकरों के बीच तालमेल बहुत-ही जरूरी हैं।

बन्द मुँह से बोलना

आम चर्चा है: "मुँह खोलो तो और भी आफत!" जाहिर है कि ऐसे में बोलने वाले नादान होते हैं अथवा दल्ले। नादानी ज्यादा दिन नहीं चलती और दल्लों-भाण्डों को तो गुमराह करने के लिए बक-बक करने के लाइसैन्स हैं।

बिल्ली के गले में घण्टी कौन बाँधे? बिल्ली के गले में घण्टी बाँधने वाले-वाली की जरूरत ही नहीं है!

साहबों के सामने बिना मुँह खोले ही परमानेन्ट मजदूर, कैजुअल वरकर, ठेकेदारों के मजदूर और वर्कशॉप वरकर एक-दूसरे को ऐसे अनेक गुर सिखा सकते हैं जो ठेकेदारी प्रथा-कैजुअल सिस्टम-वर्कशॉपों में कार्य की लागत बहुत बढा दें। कार्यस्थलों पर तथा कार्यस्थलों के बाहर एक-दूसरे से चर्चायें और तालमेल ऐसे-ऐसे महीन व सहज-सरल तरीकों की बाढ ला सकते हैं कि कभी मशीनों को, कभी मैटेरियल को, कभी रिजेक्शन को देख कर साहब लोग अपने बाल नोचने लगें। लागत का बढना, मँहगा पड़ना ही ठेकेदारी प्रथा व कैजुअल सिस्टम की काट है। बिना मुँह खोले बोलना इस काट को धार देना है।

"एक हजार में एक लाख का काम करवाना शोषण और पाँच हजार में तीन लाख का काम करवाना शोषण नहीं" की फैलाई जाती धूर्त धुन्ध को मजदूरों के बीच दिहाड़ियों के फर्क का कम होना कुछ छाँटता है। यह नई राहें खोलना भी लिये है: मजदूरों द्वारा मजदूरी-प्रथा पर ही प्रश्न उठाना, वर्तमान पर ही प्रश्नचिन्ह लगाना। (जारी) ■

काम कम।
बातें ज्यादा।।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

दासता दिहाड़ी की

चार महीने हो गये पर मिल न पाई सेलरी
इस से पूछें उस से पूछें कब मिलेगी सेलरी
अब तो मिल भी जाओ रूठी हो क्यों तुम सेलरी
या बताओ यूँ ही कब तक रूठी रहोगी सेलरी

दूध वाला रोज पूछे मिल गई क्या सेलरी
ताने कसे प़रचून वाला खा गये क्या सेलरी
सब्जी क्या अब रोटी के भी लाले पड़े हैं सेलरी
छूट गया स्कूल भी बच्चों का अब तो सेलरी

तू बता किस देवता की पूजा करूँ मैं सेलरी
कौन सा मैं व्रत करूँ तेरे लिये हे सेलरी
कट कमीशन से गुजारा उनका तो होता सेलरी
मेरे लिये तो आस है बस एक तू ही सेलरी

वार्निंग लैटर मिलें मैं जब भी माँगूँ सेलरी
काम तो मिल में करूँ चौराहे पे माँगूँ सेलरी
वे बुला लेते पुलिस जब मिल के माँगें सेलरी
अधिकारी भी ले के थैली खूँटी पे टाँगें सेलरी

दर्द मेरा समझ कर अब मिल जाओ सेलरी
चार महीने हो गये देखे तुझे हे सेलरी ।।

— जसवन्त

और बातें यह भी

रेक्सोर इंडिया लिमिटेड मजदूर : " कम्पनी 10 घन्टे रोज की ड्युटी लेती है और पैसे 8 घण्टे ड्युटी के ही देती है। हर रोज हम से दो घण्टे बेगार कराते हैं।"

व्हर्लपूल वरकर : " ऑपेरा मॉडल का उत्पादन ज्यादा करवाने के लिये मैनेजमेन्ट ने 4-4 लड्डू बाँटे और शिफ्टों के बीच होड़ करवा कर हमें अधिक दौड़ाने की फिराक में है। ऑपेरा ने कई जगह मजदूर फालतू बना दिये हैं और कुछ डिपार्टमेन्टों में काम का बोझ बहुत बढा दिया है। लाइनर में जो काम पहले करते थे वह तो है ही, एक तार तथा एक पाइप अलग से जँचा कर लगाने पड़ते हैं। प्लास्टिक भी हार्ड वाला कर दिया है जिससे अतिरिक्त तकलीफ होती है।"

लिसिनेवल ऑटो लेक मजदूर : " कुछ समय पहले लीडरों ने एग्रीमेन्ट से जो प्रोडक्शन बढाई है उसे देना ही बहुत मुश्किल है। इधर मैनेजमेन्ट हमारी क्लासें लगा रही है जिनमें विद्वान हमें उत्पादन और बढाने की शिक्षा देते हैं। 5-6 सी.एन.सी. मशीनें बाहर भेज दी हैं और उन पर काम करते वरकरों को मैनेजमेन्ट इधर-उधर लगा देती है।"

हितकारी पोट्रीज वरकर : " 1.1.97 से फैक्ट्री बन्द है पर चोरी-छिपे मैनेजमेन्ट सिलिकोज डिपार्ट चला रही है — यहाँ मिट्टी तैयार होती है और चाइना साइड की दीवार में गेट है। हमारी शिकायतों के बावजूद यह गैर-कानूनी कार्य चल रहा है। सितम्बर 99 में नेताओं ने हमें बताया कि हाई कोर्ट में केस जीत गये हैं और 16 नवम्बर तक हमें पैसे मिल जायेंगे। हमें कोई पैसे नहीं दिये गये। तब लीडरों ने कहा कि मैनेजमेन्ट ने हाई कोर्ट से दो महीने का टाइम लिया है। वे दो महीने भी कब के बीत गये हैं पर हमें हमारे पैसे नहीं दिये गये हैं।"

झालानी टूल्स मजदूर : "लूट-पाट के बाद मैनेजमेन्ट ने अपने हाथ झाड़ लिये हैं — जाते-जाते दिसम्बर 99 की तनखा जो होली पर जा कर दी उसमें से 110 रुपये हर मजदूर के काट लिये अपनी गुण्डावाहिनी के लिये। पहले ही बकाया 21 महीनों की तनखा में तीन महीने और जुड़ गये हैं तथा कम्पनी तेजी से बन्दी की ओर है। मैनेजमेन्ट की गुण्डागर्दी के सम्मुख अपने-अपने में हर वरकर के सिमटते-सिकुड़ते जाने का नतीजा है हर मजदूर का अपने दो-ढाई लाख रुपयों से हाथ धोने का पूरा खतरा। कुछ वरकर तो इस कदर पगला गये हैं कि नाइट अलाउन्स और 'काम है — काम नहीं है' बड़बड़ाते हैं।"

खेतान फैन मजदूर : " अब अपना खाना भी हम अपने साथ नहीं ले जा सकते — सेक्युरिटी ऑफिस में लन्च बॉक्स जमा करवाने का नया नियम मैनेजमेन्ट ने बनाया है। लन्च में चाय-बीड़ी के लिये फैक्ट्री से बाहर जाने पर भी मैनेजमेन्ट ने रोक लगा दी है।"

रुटीन एक्सीडेन्ट

साहनी सिल्क मजदूर : " मैनेजमेन्ट ने अक्टूबर से वेतन नहीं दिया है। इधर 2 महीने से ले-ऑफ लगा रही है। हमें हिसाब दिये बिना कम्पनी बन्द करने का चक्कर है।"

एलकॉन वरकर : " हम से हस्ताक्षर 2200 कुछ पर करवा लेते हैं और देते हैं 1680 रुपये।"

एस पी एल मजदूर : " बोनस नहीं देते। सी एल और अर्नड छुट्टियाँ नहीं देते। परमानेन्ट नहीं करते — सब ब्रेक वाले हैं। ब्रेक के बाद तुरन्त लेते भी नहीं — एक-दो महीने चक्कर कटवा कर लेते हैं।"

निक्को ऑटो लिमिटेड वरकर : " हैल्परों को बहुत परेशान करते हैं — एक से दूसरी जगह, दूसरी से तीसरी जगह लगा देते हैं। छह महीने बाद ब्रेक कर देते हैं।"

अतुल ग्लास मजदूर : "फैक्ट्री में 5-6 प्लान्ट हैं और दिन में 12 ट्रक माल तैयार हो कर लोड होता है लेकिन आज 13 मार्च तक हमें फरवरी का वेतन नहीं दिया है।"

सेन्ट जोहन स्कूल वरकर : " मैं साढे पाँच साल से इस स्कूल में नौकरी कर रहा हूँ। सात फरवरी को अचानक मुझे निकाल दिया। मैंने श्रम विभाग में शिकायत की। अब सेन्ट जोहन मैनेजमेन्ट मुझे ठेकेदार का वरकर बता रही है।"

बी एच डब्लू कैसल्स मजदूर : " मैनेजमेन्ट हमें डी.ए. नहीं देती।"

मिटाकोटी वरकर : "धक्का-मुक्की से, जबरदस्ती काम करवाते हैं। फुल फाइनल पर पहले ही हस्ताक्षर तथा अँगूठा लगवा कर अपने पास रखते हैं।"

सेवा इन्टरनेशनल मजदूर : "सैक्टर 27 ए के प्लाट 73 स्थित न्यू इंडिया इंजिनियरिंग वर्क्स के हम मजदूरों को सेवा मैनेजमेन्ट ने नवम्बर 99 का वेतन भी आज 13 मार्च तक नहीं दिया है। पहली जनवरी से मैनेजमेन्ट ने हमें काम देना बन्द कर दिया। अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर 99 के ओवर टाइम काम के पैसे भी हमें अभी तक नहीं दिये हैं। सेवा मैनेजमेन्ट ने 15 फरवरी से हमारे वाले और दो अन्य प्लान्टों में ले-ऑफ लगानी शुरू की हुई है।"

सुपीरियर सेक्युरिटी गार्ड : " हम से 12 घन्टे रोज की ड्युटी लेते हैं और महीने के 2000 देते हैं। न फण्ड है, न ई.एस.आई. है और तनखा 15-16 तारीख को जा कर देते हैं।"

बी.के.जी. मैटल मजदूर : " ऑपरेटरों को 1400 और हैल्परों को 1000 रुपये महीना वेतन देते हैं। कुछ को छोड़ कर बाकी की ई.एस.आई. नहीं, फण्ड नहीं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं।"

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये

✶ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

✶ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये।

✶ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार ही छाप पाते हैं और 5000 प्रतियाँ ही फ्री बाँट पाते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें।

आधार विकल्पों के

गवर्नमेन्ट प्रेस मजदूर : " कम्पनियाँ बन्द होती जा रही हैं – हिसाब कोई देता नहीं। सरकारी क्षेत्र में भी कोई नौकरियाँ नहीं हैं – जो लगे हैं उन्हें ही निकाल रहे हैं और नई भर्ती करते नहीं। आखिर रोजी- रोटी के लिये लोग कहाँ जायें ? दीखता है कि हालत और बिगड़ेंगी। लेकिन कहाँ तक ? यह व्यवस्था अब आगे नहीं चल सकती।"

इन्डीकेशन वरकर : " दरअसल मजदूर नहीं चाहते कि मजदूरों के बीच ठेकेदार हों लेकिन हमारे न चाहने पर भी रहते हैं। ऐसे ही हम चाहते हैं कि नेताओं को खत्म करो तो कम्पनी दूसरा तरीका अपना लेती है – कमेटी खड़ी कर लेती है और कोई चीज पास- फेल करवानी हो तो उसी से बातचीत कर लेती है। पक्ष- विपक्ष के नेता दोनों ही मैनेजमेन्ट के पट्ठे हैं। इनसे हट कर कैसे सोचा जाये ? और फिर दादागिरी का खतरा। मजदूरों के पास क्या हथियार बचता है ? "

प्रभा इन्टरप्राइजेज मजदूर : " साल- डेढ साल बाद यहाँ नौकरी खत्म कर देते हैं। छह महीने कैजुअल के तौर पर रखते हैं और फिर ठेकेदार के वरकर बना देते हैं। फिर नौकरी खत्म कर देते हैं। यह सीन हमेशा सामने रहती है इसलिये काम करने में मन बिल्कुल नहीं होता। रोटी- पानी के लिये हम समय पास करते हैं।"

इन्डो प्रिन्ट्स वरकर : " नेता लोग खूब बेवकूफ बनाने की कोशिश करते हैं। रोज मैनेजमेन्ट से मीटिंग करते हैं। कई महीने बोनस के लिये मीटिंग करते रहे। बोनस मिला 8.33 प्रतिशत जबकि घाटे पर भी 8.33 दिये जाने का कानून है। हम यूनियन के प्रति कोई लगाव नहीं रखते लेकिन कम्पनी यूनियन को महत्व देती रहती है। अपने- अपने ढँग से मजदूर खुद कदम उठाते रहते हैं। यूनियनों में दादा किस्म के लोग रखते हैं ताकि मजदूर कुछ तो दबें।"

ए.बी.बी. मजदूर : " हर फैक्ट्री में मजदूरों का बुरा हाल है। दिन- प्रति- दिन और बुरा होता जा रहा है। अगर मजदूरों को इसे रोकना है, अपने को तथा अगली पीढी को और परेशानियों से बचाना है तो मैनेजमेन्टों व लीडरों के विरोध में स्वयं कदम उठाने होंगे। कुछ परेशानियाँ झेल कर भी हमें यह करना होगा।"

बातें हमारी-तुम्हारी

कास्ट मास्टर मजदूर : " तनखा तो टाइम पर दे देते हैं पर है बहुत कम। 15- 20 साल की सर्विस के बाद भी 3 हजार ही है। दाल- रोटी भी मुश्किल से चलती है। "

आयशर ट्रैक्टर वरकर : " कुछ मजदूरों को शॉर्ट लीव जैसे छोटे लालच दे कर मैनेजमेन्ट लाइन की स्पीड बढा देती है। या यह कहो कि टुच्चे स्वार्थों के चक्कर में कुछ मजदूर ऐसे काम करते हैं जो सब मजदूरों के लिये दुखदायी बन जाते हैं।"

साधू फोरजिंग मजदूर : " फैक्ट्री में हमारी हालत बहुत खराब कर रहे हैं – लगता है 5 साल में फैक्ट्री में कोई परमानेन्ट वरकर नहीं बचेगा। यूनियन नहीं है तो क्या, दल्ले तो हैं ही। छोटी- छोटी बातों पर कम्पनी इस्तीफे लिखवाने की फिराक में रहती है। कुछ वरकर मूँछ नीची नहीं करने के चक्कर में नौकरी छोड़ने को तैयार हो जाते हैं – कम्पनी जान- बूझ कर ऐसे वरकरों को घेरे में लेती है।"

कैजुअल वरकर : " ई.एस.आई. कटती है पर **इन्डीकेशन** फैक्ट्री में कैजुअलों का प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं है। कैन्टीन में रेट ज्यादा है और परमानेन्टों को इसके एवज में मैनेजमेन्ट 300 रुपये महीना देती है पर कैजुअलों को कुछ नहीं देती। दूर- दूर से आते हैं, थोड़ा- सा लेट होने पर आधी दिहाड़ी मारी जाती है।"

बिजली बोर्ड मजदूर : " मैनेजमेन्ट, यूनियन और सरकार का रोल हर जगह एक- सा है, क्षेत्र चाहे प्राइवेट हो चाहे सरकारी।"

रेस्टॉरेन्ट वरकर : " पवित्र नगर हरिद्वार का पवित्र स्थान हर की पौड़ी हमारे लिये अतिरिक्त परेशानी लिये है। सुबह- सवेरे से देर रात तक की चहल- पहल का मतलब है रोज 16- 17 घण्टे की ड्युटी। "

ठेकेदार के मजदूर : " हम से **व्हर्लपूल** में प्रोडक्शन का काम तो करवाते ही हैं, ठेकेदार 80 रुपये पर हस्ताक्षर करवाते हैं और देते 50 की दिहाड़ी हैं। जो मजदूर पैसे कम देने की शिकायत मैनेजरों से करता है उसे वे नौकरी से निकलवा देते हैं।"

कैजुअल वरकर : " हमारे द्वारा मशीन पर निर्धारित काम पूरा करने के बाद **एस्कोर्ट्स राजदूत प्लान्ट** में मैनेजर हमें दूसरी मशीन पर लगा देते हैं। हम एतराज करते हैं तो कहते हैं कि कार्ड उठा देंगे, निकाल देंगे। "

लाखों से कहो, लाखों से पूछो

विकल्प तो खुले हैं कुछ तो सोचो
बढ रही है बरबादी इसे अब रोको

मेहनत करने से भविष्य नहीं बनेगा
जो तुम्हें चूसते हैं उन्हें तुम नोचो

सुधार होगा इसमें ये दिवास्वप्न है
अपने लिये ही इस तन्त्र को उखाड़ फेंको

सरकार, मैनेजमेन्ट और धर्म के धुरंधर
हमें नोचते हैं हर पल हर दिन निरन्तर
इन्हें हटाना होगा अगर ढँग से जीना है तो

हम से 'खून' ये सस्ता खरीदते हैं
और 'पानी' हमें ये अपना मँहगा बेचते हैं

विकल्प है
अपनी लाखों से कहो और तुम लाखों से पूछो

एक दूसरे की बात जब समझेंगे हम
तभी दूर होगा हमारा ये गम

अब भी अगर लिंग भेद हम करेंगे
तो सड़- सड़ के यूँ ही मरते रहेंगे

गाँव, देश, घर, द्वार मैनेजमेन्टों के होते हैं
मजदूर तो हर पल हर दिन बस सड़कों पर सोते हैं
जबकि सब कुछ अपना है जरा नजर उठा के देखो

अपना ये लक्ष्य बने कि मैनेजमेन्टें बरबाद हों
लेकिन कदम भी ऐसे हों कि उनको न आभास हों
सब कुछ अपने हाथ है आप अगर मजदूर हो

विकल्प तो खुले हैं कुछ तो सोचो
बढ रही है बरबादी इसे अब रोको।

– अजय

फटना दूध का

नोयडा काम करते चपरासी का खत : " वर्तमान की अति पीड़ादायक छीना- झपटी और नियमों- कानूनों से न सिर्फ जनजीवन अस्त- व्यस्त हुआ है बल्कि ईट- पत्थर की दीवारों के भी आँसू बह निकले हैं। मैं तो इस जिन्दगी से इतना दुखी हो गया हूँ कि न किसी से मिलने का दिल करता है, न किसी से बात करने का – सभी लूटने के चक्कर में रहते हैं। आज हमारी जिन्दगी पूर्णतया पशुवत हो गई है। मुझे इस कम्पनी में 10 साल हो गये। परमानेन्ट होने के चक्कर में मैंने अपनी मैकेनिकी छोड़ दी। सोचा था परमानेन्ट हो जाऊँगा, जिन्दगी बन जायेगी। लेकिन आज हालत ऐसी है कि बस का किराया तक नहीं रहता। एक साइकिल का जुगाड़ नहीं कर पाया। आते- जाते बसों में तू- तू मैं- मैं हो ही जाती है। कम्पनी पिछले तीन महीनों से पेमेन्ट नहीं कर रही है, पिछले दो महीने का कन्वेयन्स भी नहीं मिला। साहबों से पैसे की बात करते हैं तो कहते हैं : 'यार 10 साल से तुम काम कर रहे हो, अभी तक ऐसी नौबत आई क्या ? वो क्या है कि कम्पनी घाटे में चल रही है इसलिये ऐसा हो रहा है। स्टाफ को ही ले लो, पिछले 6 महीनों से किसी की पेमेन्ट नहीं हुई है – मेडिकल वाउचरों से ही काम चला रहे हैं। यार जब हम लोगों की ये हालत है तो तुम्हें खुद सोचना चाहिये।' साहबों की इस पाशविक शैली से इतना क्षुब्ध हो जाता हूँ कि कम्पनी को तबाह करने की ललक दिल में उमड़ पड़ती है। कम्पनी के सारे दूध को दही बना देता हूँ।"

पगडण्डियाँ मुक्ति की

अमरीका में ट्रक निर्माण में मजदूर : "हम सेंट पॉल नगर में फोर्ड ट्रक निर्माण फैक्ट्री में काम करते हैं। ट्रेन पर ट्रकों की लोडिंग के कार्य की रफ्तार बढाने के खिलाफ चार महीने जद्दोजहद के बाद हम अभी निपटे ही हैं। यूनियन ने धमकी दी थी कि हम ने रफ्तार नहीं बढाई तो हमारी नौकरियाँ नये लोगों को दे देगी। यूनियन प्रधान ने फाँका कि हमारे खिलाफ पूरी फैक्ट्री में नोटिस लगायेगा। यूनियन यह कह कर हमारी आलोचना कर रही थी कि हमें फोर्ड कम्पनी की कोई चिन्ता नहीं थी। हम में फूट डालने की घिनौनी चाल में यूनियन नेताओं ने हमारे नये सहकर्मियों के साथ अलग से मीटिंगें की। अन्ततः हम ने यूनियन को परे रख कर कम्पनी के साथ स्वयं सैटल किया। यूनियन जिसे कम से कम सम्भव गति बता रही थी उससे भी कम रफ्तार पर हम ने समझौता किया – एक ट्रेन लोड ट्रक लदाई के वास्ते यूनियन जो कह रही थी उससे 2 घन्टे 24 मिनट अधिक समय लिया।" (न्यू डेमोक्रेसी, मार्च – अप्रैल 2000 अंक में फोर्ड ट्रक फैक्ट्री मजदूर टॉम लैने)

एंस्कोर्ट्स वरकर : "कैजुअलों को हम कहते हैं कि पहले काम खत्म मत करो। जल्दी – जल्दी करके काम पूरा कर कुछ सुस्ताने के चक्कर में रहोगे तो खाली बैठे देख कर मैनेजर अन्य काम में लगा देंगे। बीच – बीच में रैस्ट लिया करो – मैनेजर चाह कर भी तुम पर अतिरिक्त काम नहीं थोप सकेंगे। शुरू से ही ऐसे करो कि काम पहले खत्म ही नहीं हो। रोज – रोज खटना है इसलिये अपने शरीर को बचाने के लिये बीच – बीच में रैस्ट जरूरी हैं।"

सेक्युरिटी गार्ड का पत्र : "लाइटों की चमचमाहट, गानों की गुनगुनाहट, मदिरा का सुरूर, पैसे का गुरूर, हवा के मन्द – मन्द झोंके और विभिन्न प्रकार के व्यंजन भी मेरे मन को आकर्षित नहीं कर पा रहे थे। बल्कि, मुझे इन सबों को देख कर और भी आक्रोश आ रहा था क्योंकि इस धूमधड़ाके वाली वैवाहिक पार्टी में मैं एक गार्ड के रूप में कार्यरत था। मुझ से न कोई बात कर रहा था, न कोई मेरी तरफ देख रहा था जबकि मैं हर आगंतुक को नमस्कार कर रहा था। धीरे – धीरे पार्टी समाप्त हो गई, वैवाहिक कार्यक्रम सम्पन्न हो गया और मैं ग्यारह बजे रात तक खड़ा रहा भूखा – प्यासा। रात सवा ग्यारह सुपरवाइजर आया और उसने हमें घर जाने को कहा तो हमारा क्रोध सिर के ऊपर हो गया क्योंकि भूख के मारे जान जा रही थी। हम ने कहा कि खाने के लिये पैसे चाहियें तो उसने साफ मना कर दिया। हम उस रात भूखे तो सो गये लेकिन बदले की भावना और पेट की पीड़ा .... अगले दिन फैक्ट्री में ड्युटी पर गया तो सारे वरकरों को अपने तरीके से सचेत कर दिया कि जब तक मैं गार्ड हूँ जो मरजी करना हो करो। कॉनट्रैक्ट टूटने का खतरा बन गया है। मुझे काफी सन्तोष है।"

कटलर हैमर मजदूर : "टेकमसेह में तालाबन्दी की खबर लगते ही हमारी आँखें खुली और फटाफट हम टूल डाउन के जाल को काट कर फँसने से बचे। मामला कटलर हैमर में भी छँटनी का है। हमारे द्वारा जाल काट देने से बौखलाई मैनेजमेन्ट रोज वर्क लोड बढा रही है। सुपरवाइजर आज निर्धारित किये उत्पादन को अगले दिन बढा देते हैं – कुछ कहो तो लैटर की धमकी देते हैं। साहब लोग उल्टी – सीधी भाषा का प्रयोग करते हैं, महिलाओं के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं कि रुला देते हैं। यह सब हमें भड़काने के लिये है लेकिन हम फिर भड़कावे में नहीं आयेंगे। ठण्डे रह कर इनसे निपटने के तरीके हम जानते हैं।"

यन्त्र पूजा

फील्ड वरकर : "मण्डीदीप, भोपाल स्थित एच.ई.जी. फैक्ट्री में कोयले का महीन पीस कर विशाल इलेक्ट्रोड बनाये जाते हैं जो कि लोहा गलाने के काम आते हैं। महीन कोयला पूरी फैक्ट्री में उड़ता रहता है। एक – दो घन्टे में ही वरकर सिर से पाँव तक काले स्याह हो जाते हैं। भट्टियाँ खुली हैं और चार हजार डिग्री तापमान पर काम करती हैं। काम के सिलसिले में एक वरिष्ठ मैनेजर मुझे फैक्ट्री दिखा रहे थे। उनसे यह पूछने पर कि इतनी खराब वर्किंग कण्डीशन में काफी दिक्कतें आती होंगी, मैनेजर महोदय आँखों के सामने काम पर लगे मजदूरों को पूर्णतः नजरअन्दाज कर के बोले, 'हाँ, मशीनों की मेन्टेनैन्स में काफी दिक्कत आती है।'"

पहेली नहीं यह जाल

हिन्दुस्तान लैदर मजदूर : "अक्टूबर 99 में यूनियन ने फैक्ट्री गेट पर झण्डा लगाया। हम 60 थे – झण्डा लगने के बाद मैनेजमेन्ट ने 18 को वैसे ही निकाल दिया और फिर 22 अन्य को हिसाब दे कर निकाल दिया। बड़ा लीडर अब दर्शन ही नहीं देता और 18 का केस चल रहा है। इधर मैनेजमेन्ट फैक्ट्री में गुण्डे घुमा कर बहुत परेशान कर रही है।"

टेकमसेह वरकर : "फैक्ट्री में मजदूर की मौत पर 16 फरवरी को टूल डाउन तो दोनों प्लान्टों में करवा दिया लेकिन मैनेजमेन्ट और लीडरों के लाख प्रयासों के बावजूद मजदूर गरम नहीं हुये। नब्बे प्रतिशत मजदूरों की टूल डाउन के खिलाफ उठती आवाजों से अपना खेल बिगड़ता देख मैनेजमेन्ट ने 5 मार्च को तालाबन्दी कर दी। सरकार से दो डिपार्टमेन्टों को बन्द करने की इजाजत माँगने वाले 22 मार्च के पत्र की प्रतियाँ गेटों पर चिपका कर मैनेजमेन्ट ने छँटनी का नगाड़ा बजा दिया है। गुमराह करने के लिए मैनेजमेन्ट एक के बाद दूसरा खत हर मजदूर के पते पर भेज रही है। मामला 650 की छँटनी और बचे हुओं पर 600 – 700 प्रतिशत काम का बोझ बढाने का है इसलिये टेकमसेह में हम सब का मामला है। देर – सबेर घुमा – फिरा कर, नाटक – नौटंकियों के बाद धड़ बचाने के नाम पर हाथ कटवाने वाली मैनेजमेन्ट – यूनियन सैटलमेन्ट होगी। उस घातक समझौते को फेल करना हर मजदूर के अपने हित में होगा। महिला व पुरुष मजदूर, दृष्टिवाले व दृष्टिहीन मजदूर अपने – अपने तौर पर कदम उठा कर तथा आपसी चर्चाओं – तालमेलों द्वारा छँटनी व वर्क लोड में वृद्धि से निपट सकते हैं। जहाँ तक मैनेजमेन्ट की अमरीका में मजदूर द्वारा यहाँ के मजदूर से 7 गुणा ज्यादा कीमत का उत्पादन करने की बात है, **मालूम करने पर पता चला है कि अमरीका में टेकमसेह मजदूर एक घण्टे काम के 450 रुपये लेता है, 8 घण्टे की एक शिफ्ट के 3600 रुपये लेता है जो कि यहाँ के टेकमसेह मजदूर से 15 गुणा ज्यादा पैसे हैं।"**

नूकेम मशीन टूल्स मजदूर : "फिर चार महीनों की तनखा बकाया हो गई। इस पर अनेकों कदमों द्वारा मैनेजमेन्ट की नाक में दम करने की बजाय 17 मार्च को लीडरों ने टूल डाउन की घोषणा कर दी। तीन दिन बाद शर्तों पर हस्ताक्षर को मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री में प्रवेश की शर्त बनाया और ज्यादातर मजदूर गेट के बाहर हो गये। हमारे यहाँ यही घटनाक्रम जनवरी में हुआ था। इसलिये यह अनजाने में अपने पैर में कुल्हाड़ी मारना नहीं है बल्कि जा कर कुल्हाड़ी पर पैर मारना है। मैनेजमेन्ट हम में से कुछ को नौकरी से निकालना चाहती है और लगता है कि उसके लिये यह शतरंज खेली जा रही है।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "1996 में स्टाफ अपनी डिमान्डें हासिल करने के बहुत नजदीक पहुँच गया था – यह बिल्कुल ठण्डे रहने के परिणामस्वरूप हुआ था। एक बार हम गरम हो गये और हड़ताल कर बैठे – नतीजतन हम नेगेटिव में चले गये।"

दवा की कम्पनी - बीमारी का घर

इकॉनोमिक टाइम्स (31 मार्च – 6 अप्रैल) में **ग्लेक्सो** कम्पनी के एक विज्ञापन का भावार्थ : "ऐसा अक्सर होता है। पिताजी घर पर दफ्तर का काम लाते हैं। देर रात तक कागजों से माथा – पच्ची करते रहते हैं। पिताजी एक बहुत बड़ी कम्पनी में काम करते हैं। रिसर्च ऑफिसर हैं। इसका मतलब मुझे मालूम नहीं पर मैं देखती हूँ कि लोग कम्पनियों के सामने कितने मजबूर हो जाते हैं। यह कम्पनी लगातार नई – नई दवाईयाँ खोजती रहती है। कम्पनी की उन्नति इसी में है कि ज्यादा लोग बीमार हों, हमेशा बीमारियाँ बढ़ती रहें। और पापा को काम की बीमारी, काम से बीमारी है ..... पिछले दो रविवार भी वह घर नहीं, कम्पनी में रहे।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।